इकाई 20 काव्य–वाचन एवं विश्लेषण : हिमालय, समर शेष है, कलम आज उनकी जय बोल

इकाई की रूप रेखा

20.0 उद्देश्य

20.1 प्रस्तावना

20.2 चयनित कविताओं का पाठ एवं विश्लेषण

20.3 उपयोगी पुस्तकें

20.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

20.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- रामधारी सिंह दिनकर की पांच कविताओं, की विस्तृत व्याख्या समझ सकेंगी/सकेंगे;
- रामधारी सिंह दिनकर की कविताओं का मूल स्वर पहचान सकेंगी/सकेंगे;
- इन कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीयता की भावना को समझ सकेंगी/सकेंगे;
- रामधारी सिंह दिनकर की काव्य–भाषा के तत्वों की पहचान करना सीख सकेंगी/सकेंगे;
- रामधारी सिंह दिनकर की कविताओं में शब्द–योजना और प्रयुक्त शब्दावली से परिचित हो जायेंगी/जायेंगे; और
- रामधारी सिंह दिनकर के जीवन और उनकी साहित्यिक–राजनीतिक यात्रा के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगी/सकेंगे।

20.1 प्रस्तावना

जीवन परिचय–

हिन्दी के सुविख्यात कवि रामाधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितंबर 1908 ई. में सिमरिया, जिला मुंगेर (बिहार) में हुआ था। दिनकर के पिता एक साधारण किसान थे। उनका बचपन और कैशोर्य देहात में प्रकृति की गोद में बीता। दिनकर जी ने प्राथमिक विद्यालय एवं राष्ट्रीय मिडिल तक की शिक्षा गांव के स्कूल में पूरी की। हाई स्कूल की शिक्षा इन्होंने मोकामाघाट हाई स्कूल से प्राप्त की। 1928 में मैट्रिक के बाद दिनकर ने 1932 में पटना विश्वविद्यालय से इतिहास में बी.ए. ऑनर्स किया। इसके बाद एक स्कूल में प्रधानाध्यापक नियुक्त हुए। 1934 में बिहार सरकार के अधीन सब–रजिस्ट्रार का पद पर इनकी नियुक्ति हो गयी। 1947 में उन्हें बिहार विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग में विभागाध्यक्ष पद पर और 1952 में राज्य सभा का सदस्य नियुक्त किया गया। 12 वर्षों तक राज्यसभा सदस्य रहने के बाद वे भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त किये गये। लेकिन जल्द ही इन्हें भारत सरकार का हिन्दी सलाहकार बनाकर दिल्ली बुला लिया गया। 24 अप्रैल 1974 को दिनकर जी का स्वर्गवास हो गया।

काव्य कृतियाँ

बारदोली–विजय संदेश (1928), प्रणभंग (1929), रेणुका (1935), हुंकार (1938), रसवन्ती (1939), द्वंद्वगीत (1940), कुरूक्षेत्र (1946), धूप–छाँह (1947), सामधेनी (1947), बापू (1947), इतिहास के आँसू (1951), धूप और धुआँ (1951), मिर्च का मजा (1951), रश्मिरथी (1952), दिल्ली (1954), नीम के पत्ते (1954), नील कुसुम (1955), सूरज का ब्याह (1955), चक्रवाल (1956), कवि–श्री (1957), सीपी और शंख (1957), नये सुभाशित (1957), लोकप्रिय कवि दिनकर (1960), उर्वशी (1961), परशुराम की प्रतीक्षा (1963), आत्मा की आँखें (1964), कोयला और कवित्व (1964), मृत्ति–तिलक (1964), दिनकर की सूक्तियाँ (1964), हारे को हरिनाम (1970), संचियता (1973), दिनकर के गीत (1973), रश्मिलोक (1974), उर्वशी तथा अन्य श्रृंगारिक कविताएँ (1974)।

गद्य कृतियाँ–

मिट्टी की ओर (1946), चित्तौड़ का साका (1948), अर्धनारीश्वर (1952), रेती के फूल (1954), हमारी सांस्कृतिक एकता (1955), भारत की सांस्कृतिक कहानी (1955), संस्कृति के चार अध्याय (1956), उजली आग (1956), देश–विदेश (1957), राष्ट्र–भाषा और राष्ट्रीय एकता (1955), काव्य की भूमिका (1958), पन्त–प्रसाद और मैथिलीशरण (1958), वेणुवन 1958, धर्म, नैतिकता और विज्ञान (1969), वट–पीपल (1961), लोकदेव नेहरू (1965), शुद्ध कविता की खोज (1966), साहित्य–मुखी (1968), राष्ट्रभाषा आंदोलन और गांधी जी (1968), हे राम! (1968), संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ (1970), भारतीय एकता (1971), मेरी यात्राएँ (1971),दिनकर की डायरी (1973),चेतना की शिला (1973), विवाह की मुसीबतें (1973), आधुनिक बोध (1973)।

सम्मान–

1. कुरुक्षेत्र के लिये काशी नागरी प्रचारिणी सभा सम्मान
2. 1959 में साहित्य अकादमी पुरस्कार।
3. 1959 में पद्म विभूषण सम्मान।
4. विद्या वाचस्पति सम्मान।
5. 1968 में राजस्थान विद्यापीठ का साहित्य–चूड़ामणि सम्मान।
6. 1972 में उर्वशी के लिये ज्ञानपीठ पुरस्कार।

20.2 चयनित कविताओं का पाठ एवं विश्लेषण

एक

हिमालय

मेरे नगपति! मेरे विशाल!
साकार, दिव्य, गौरव विराट्,
पौरुष के पुन्जीभूत ज्वाल!

मेरी जननी के हिम–किरीट!
मेरे भारत के दिव्य भाल!
मेरे नगपति! मेरे विशाल!
युग–युग अजेय, निर्बन्ध, मुक्त,
युग–युग गर्वोन्नत, नित महान,
निस्सीम व्योम में तान रहा
युग से किस महिमा का वितान?
कैसी अखंड यह चिर–समाधि?
यतिवर! कैसा यह अमर ध्यान?
तू महाशून्य में खोज रहा
किस जटिल समस्या का निदान?
उलझन का कैसा विषम जाल?
मेरे नगपति! मेरे विशाल!
ओ, मौन, तपस्या–लीन यती!
पल भर को तो कर दृगुन्मेष!
रे ज्वालाओं से दग्ध, विकल
है तड़प रहा पद पर स्वदेश।
सुखसिंधु, पंचनद, ब्रह्मपुत्र,
गंगा, यमुना की अमिय–धार
जिस पुण्यभूमि की ओर बही
तेरी विगलित करुणा उदार,
जिसके द्वारों पर खड़ा क्रान्त
सीमापति! तू ने की पुकार,
पद–दलित इसे करना पीछे
पहले ले मेरा सिर उतार।
उस पुण्यभूमि पर आज तपी!
रे, आन पड़ा संकट कराल,
व्याकुल तेरे सुत तड़प रहे
डस रहे चतुर्दिक विविध व्याल।
मेरे नगपति! मेरे विशाल!

कितनी मणियाँ लुट गईं? मिटा
कितना मेरा वैभव अशेष!
तू ध्यान–मग्न ही रहा, इधर
वीरान हुआ प्यारा स्वदेश।
वैशाली के भग्नावशेष से
पूछ लिच्छवी–शान कहाँ?
ओ री उदास गण्डकी! बता
विद्यापति कवि के गान कहाँ?
तू तरुण देश से पूछ अरे,
गूँजा कैसा यह ध्वंस–राग?

अम्बुधि–अन्तस्तल–बीच छिपी
यह सुलग रही है कौन आग?
प्राची के प्रांगण–बीच देख,
जल रहा स्वर्ण–युग–अग्निज्वाल,

मेरे नगपति! मेरे विशाल!
रे, रोक युधिष्ठिर को न यहाँ,
जाने दे उनको स्वर्ग धीर,
पर, फिरा हमें गाण्डीव–गदा,
लौटा दे अर्जुन–भीम वीर।
कह दे शंकर से, आज करें
वे प्रलय–नृत्य फिर एक बार।
सारे भारत में गूँज उठे,
हर–हर–बम का फिर महोच्चार।
ले अंगड़ाई हिल उठे धरा
कर निज विराट स्वर में निनाद
तू शैलीराट हुँकार भरे
फट जाए कुहा, भागे प्रमाद
तू मौन त्याग, कर सिंहनाद
रे तपी आज तप का न काल
नवयुग–शंखध्वनि जगा रही
तू जाग, जाग, मेरे विशाल

('हुंकार' संग्रह से)

संदर्भ प्रसंग–

प्रस्तुत कविता प्रसिद्ध कवि रामधारी सिंह के काव्य संग्रह 'हुंकार' में 'हिमालय' शीर्षक से संकलित है। यह संकलन 1938 में प्रकाशित हुआ था, जबकि हिमालय कविता कवि ने सन 1933 में लिखी थी। रामधारी सिंह राष्ट्रवादी धारा के कवि थे। अंग्रेजों की गुलामी से देश को आजाद कराने के लिए देश की जनता में राष्ट्रीयता और देश प्रेम की भावना जगाना इस कविता का उद्देश्य है। गहरी समाधि में लीन हिमालय को जगाने के बहाने इस कविता में देश की जनता को जगाने का प्रयास किया गया है।

कठिन शब्द

नगपति–हिमालय (नग–पहाड़), **मेरे विशाल**– भारत की विशालता का प्रतीक, हिमालय, **मेरी जननी**– भारत माता, **हिम–किरीट**–बर्फ का मुकुट, **दिव्य–भाल**– चमकता हुआ ललाट, **अजेय**–जिसे जीता न जा सके, **निर्बंध**–बिना बंधन का, **मुक्त**– खुला हुआ, **निस्सीम व्योम**–सीमाहीन आकाश, **वितान**– आवरण, **चिर–समाधि**– लम्बे समय से ध्यान मग्न, **यतिवर**– श्रेष्ठ सन्यासी, **महाशून्य**– विराट आकाश, **यती**– साधना में डूबा हुआ सन्यासी, **दृगोन्मेश**– आंखें खोलना, **सुख–सिंधु**–सिंधु नदी जो देश को सुखी बनाती है, **पंचनद**– पांच नदियां, **अमिय धार**– अमृत की तरह जलधारा, **पुण्य भूमि**–पवित्र भूमि, भारत, **विगलित**–पिघली हुई, **सीमापति**–सीमा का रक्षक, **पद–दलित**–पराजित करना, **भग्नावशेष**– टूटा फूटा, **लिच्छवि**–प्राचीन गणराज्य,

गण्डकी–मिथिला में बहने वाली नदी, **ध्वंस–राग**–विनाश का राग, **अम्बुधि–अंतस्तल**– समुद्र के भीतर, **सिंहनाद**– सिंह की गर्जना, **स्वर्ण–युग–अग्नि जाल**– अच्छे युग के आने की चमक, **शैलराट**– विशाल पर्वत, **कुहा**–कुहासा, **नव–युग–संखध्वनि**– नये जमाने की शुरूआत।

व्याख्या–

हिमालय को विभिन्न विशेषणों से संबोधित किया गया है। हिमालय की प्रशंसा करते हुए कवि कहता है तुम भारत के गौरव का साकार विराट रूप हो। तुम पौरूष का साक्षात प्रतीक हो और भारत माँ के सिर का मुकुट हो।

तुम युगों–युगों से स्वतंत्र हो। तुम्हारी महानता पर आज तक कोई आंच नहीं आई है। तुम्हारे गौरव का वितान युगों–युगों से तना हुआ है। हे ऋषिवर! यह कैसी समाधि है? तुम युगों–युगों से चिर समाधि में यह कब टूटेगी? तुम्हारी ऊंची–ऊंची चोटियां आकाश की ओर सिर उठाये किस समस्या का समाधान खोजने में लगी हैं। तुम क्या सोच रहे हो? ऐसा लगता है तुम किसी कठिन उलझन में फंसे हुए हो।

सदियों से मौन धारण किये हुए हे धीर ब्रती! जरा देर के लिए आखें खोल कर चारों ओर देखो! दुखों की ज्वाला से विकल यह देश तुम्हारे चरणों में बैठकर तुमसे कुछ कह रहा है। सिंधु, गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र आदि पंचनदियों की धारा जो भारत की पुण्य भूमि पर बह रही हैं, तुम्हारी करूणा की धारायें हैं। तुमने इस देश की हमेशा रक्षा की है और दुश्मनों को अंदर आने नहीं दिया है। हे मौन ब्रती मेरे हिमालय! आज उसी भारत भूमि पर संकट आ पड़ा है। तुम्हारी संताने तड़प रही हैं।

कवि हिमालय से कहता है कि भारत का सारा धन वैभव लुट गया है। उसका कभी न समाप्त होने वाला वैभव भी नष्ट हो गया। तुम अभी तक ध्यान मग्न चुपचाप बैठे हो, जबकि पूरा देश वीरान होता जा रहा है!

कवि हिमालय से कहता है कि वैशाली के भग्नावशेषों को देखो! देखो कि लिच्छवि गणराज्य बरबाद हो चुका है। हे मेरे नगपति! तुम पूछते क्यों नहीं कि विद्यापति का गान कहां गुम हो गया? गंडकी उदास क्यों हैं? पूछो अपने प्यारे युवा देश से कि वह विनाश के दौर से क्यों गुजर रहा है। समुद्र के गर्भ में अग्नि की ज्वाला क्यों धधक रही है?

हे मेरे नगपति! तुम जागो! और देखो! तुम्हारा प्यारा देश वीरान होता जा रहा है। चाहें युधिष्ठिर जैसे धीर को स्वर्ग जाने दो लेकिन हमें अर्जुन और भीम को उनके धनुष और गदा के साथ लौटा दो। भगवान शिव से तांडव नृत्य करने के लिए कहो ताकि हर बम के महोच्चार से धरा एक बार गुंजायमान हो जाय और सारा आलस्य दूर हो जाय। तपस्वी हिमालय से कवि कहता है कि यह समय तप करने का नहीं है। तुम भी मौन त्याग करके उठो और सिंहनाद करो। यह नया युग तुम्हें जगा रहा है। हे मेरे विशाल नगपति उठो!

काव्य सौष्ठव–

- हिमालय का मानवीकरण किया गया है।
- हिमालय की तुलना चिर समाधि में लीन तपस्वी से की गयी है।

- सामासिक चिन्हों से युक्त शब्द–पदों का प्रयोग कविता में अर्थगौरव की सृष्टि करता है।
- प्रत्येक पंक्ति में 16 मात्राएं हैं। छोटी–छोटी पंक्तियों से बनी कविता में प्रवाह है।

विशेष–

यह कविता भारत में क्रांतिकारी जागरण की भावना से लिखी गयी है। देशवासियों में अपने देश प्रेम और स्वतंत्रता की इच्छा जगाने के लिए उस समय अनेक उपाय किये जा रहे थे। इस कविता में भी हिमालय को जगाने के बहाने जनता को जगाने का प्रयास किया गया है।

दो

समर शेष है

ढीली करो धनुष की डोरी, तरकस का कस खोलो ,
किसने कहा, युद्ध की बेला चली गयी, शांति से बोलो?
किसने कहा, और मत बेधो हृदय वह्नि के शर से,
भरो भुवन का अंग कुंकुम से, कुसुम से, केसर से?
कुंकुम? लेपूं किसे? सुनाऊँ किसको कोमल गान?
तड़प रहा आँखों के आगे भूखा हिन्दुस्तान।

फूलों के रंगीन लहर पर ओ उतरनेवाले!
ओ रेशमी नगर के वासी! ओ छवि के मतवाले!
सकल देश में हालाहल है, दिल्ली में हाला है,
दिल्ली में रौशनी, शेष भारत में अंधियाला है।
मखमल के पर्दों के बाहर, फूलों के उस पार,
ज्यों का त्यों है खड़ा, आज भी मरघट–सा संसार।

वह संसार जहाँ तक पहुँची अब तक नहीं किरण है
जहाँ क्षितिज है शून्य, अभी तक अंबर तिमिर वरण है
देख जहाँ का दृश्य आज भी अन्तःस्थल हिलता है
माँ को लज्जा वसन और शिषु को न क्षीर मिलता है
पूज रहा है जहाँ चकित हो जन–जन देख अकाज
सात वर्ष हो गये राह में, अटका कहाँ स्वराज?

अटका कहाँ स्वराज? बोल दिल्ली! तू क्या कहती है?
तू रानी बन गयी वेदना जनता क्यों सहती है?
सबके भाग्य दबा रखे हैं किसने अपने कर में?
उतरी थी जो विभा, हुई बंदिनी बता किस घर में
समर शेष है, यह प्रकाश बंदीगृह से छूटेगा
और नहीं तो तुझ पर पापिनी! महावज्र टूटेगा

समर शेष है, उस स्वराज को सत्य बनाना होगा
जिसका है ये न्यास उसे सत्वर पहुँचाना होगा

धारा के मग में अनेक जो पर्वत खड़े हुए हैं
गंगा का पथ रोक इन्द्र के गज जो अड़े हुए हैं
कह दो उनसे झुके अगर तो जग मे यश पाएंगे
अड़े रहे अगर तो ऐरावत पत्तों से बह जाऐंगे

समर शेष है, जनगंगा को खुल कर लहराने दो
शिखरों को डूबने और मुकुटों को बह जाने दो
पथरीली ऊँची जमीन है? तो उसको तोड़ेंगे
समतल पीटे बिना समर की भूमि नहीं छोड़ेंगे
समर शेष है, चलो ज्योतियों के बरसाते तीर
खण्ड–खण्ड हो गिरे विषमता की काली जंजीर

समर शेष है, अभी मनुज भक्षी हुंकार रहे हैं
गाँधी का पी रुधिर जवाहर पर फुंकार रहे हैं
समर शेष है, अहंकार इनका हरना बाकी है
वृक को दंतहीन, अहि को निर्विष करना बाकी है
समर शेष है, शपथ धर्म की लाना है वह काल
विचरें अभय देश में गाँधी और जवाहर लाल

तिमिर पुत्र ये दस्यु कहीं कोई दुष्काण्ड रचें ना
सावधान! हो खड़ी देश भर में गाँधी की सेना
बलि देकर भी बली! स्नेह का यह मृदु व्रत साधो रे
मंदिर औ मस्जिद दोनों पर एक तार बाँधो रे

समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध
जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनके भी अपराध

(परशुराम की प्रतीक्षा)

संदर्भ प्रसंग–

रामधारी सिंह दिनकर ने इस कविता की रचना सन 1954 में की थी। यह कविता 'परशुराम की प्रतीक्षा' नामक संग्रह में संग्रहीत है। भारत को आजाद हुए सात साल हो गये थे किन्तु जिस स्वप्न के साथ आजादी की लड़ाई लड़ी गयी थी, वह स्वप्न पूरा न होते देख कवि के मन में क्षोभ है। कवि एक समतामूलक समाज का पक्षधर है। उसे लगता है कि अंग्रेजों के भारत छोड़ने के बाद भी स्वाधीनता का युद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ है। देश में न्याय और बराबरी का समाज स्थापित करने के लिए अभी संघर्ष जारी रखना होगा।

कठिन शब्द

शर– तीर, **हालाहल**– विष, **तिमिर**–अंधकार, **क्षीर**–दूध, **वसन**– कपड़ा, **विभा**–प्रातःकाल, **सत्वर**– तुरंत, **मग**–रास्ता, **एरावत**– इंद्र का हाथी, **जनगंगा**– जनता रूपी गंगा, **रूधिर**– खून, **वृक**– भेड़िया, **अहि**–सर्प, **शपथ**– प्रतिज्ञा, **अभय**– बिना किसी डर के।

व्याख्या–

इस बंद में कवि यह मानने से इनकार करता है कि शांति और हंसी खुशी का समय आ गया है। इसलिए वह पूछता है कि यह किसने कहा कि धनुष की प्रत्यंचा ढीली करने और तरकस को पीठ से उतार देने का समय आ गया, अर्थात अब युद्ध काल समाप्त हो गया? वे कौन लोग हैं जो कह रहे हैं कि अब कठोर आलोचना करने का समय समाप्त हो चुका और समाज में कोमलता की भावना का प्रसार करने का समय आ गया है? कवि बड़े खिन्न भाव से पूछता है कि वह कौन है जिसे कुमकुम केसर लगाऊं और कोमल मधुर गीत सुनाऊं? क्या उस हिन्दुस्तान को जो अभी भी भूख से तड़प रहा है? इस बंद में कवि स्पष्ट रूप से कहना चाहता है कि शांति की बातें करने का समय अभी नहीं आया है। जबतक देश में गरीबी और भुखमरी है, संघर्ष जारी रखना होगा।

इस बंद में कवि महानगरों, खास कर दिल्लीवालों को धिक्कारते हुए कहता है कि ऐ सुख और सुंदरता के मतवाले दिल्लीवालों तुम्हें क्या पता नहीं कि पूरे देश की जनता दुख और संताप का विष पी कर जीवन गुजार रही है? क्या तुम्हें दिख नहीं रहा कि दिल्ली में मौज है, चकाचौंध भरी रोशनी है, लेकिन बाकी देश में चारों ओर अंधेरा ही अधेंरा छाया हुआ है? तुम्हारी रेशमी खुशबूदार दिल्ली के बाहर तो सब तरफ मरघट जैसी उदासी ही छायी हुई है।

कवि यहां कहता है कि देश को आजाद हुए सात साल हो गये, लेकिन जिस स्वराज्य के लिए आजादी मिली वह स्वराज्य तो अभी आया ही नहीं। आज भी देश में पहले जैसा ही अंधेरा छाया हुआ है। न तन ढकने को वस्त्र है न बच्चों को दूध मिल रहा है।

कवि दिल्ली यानी शासन व्यवस्था से सवाल करता है कि दिल्ली देश की रानी बन गयी, सत्ता इसके हाथ में आ गयी, लेकिन देश की जनता का दुख दूर नहीं हुआ। कवि पूछता है कि आखिर वे कौन लोग हैं जो जनता के भाग्य पर कब्जा जमाये बैठे हैं? अंग्रेजी शासन के जाने से जिस प्रकाश से देश का सौभाग्य जगमगाने की उम्मीद थी उस प्रकाश को किसी ने फिर से बंदी बना लिया है। उस प्रकाश को मुक्त कराने के लिए युद्ध अभी जारी रखना होगा।

कवि कहता है कि यह देश जिसका है उसका अपना राज्य जब तक कायम नहीं हो जाता, तब तक लड़ाई चलती रहेगी। देश के शोषकों और सत्ताधारियों की तरफ इशारा करते हुए कवि कहता है कि स्वराज्य की स्थापना के रास्ते में जो लोग बाधा बन कर खड़े हैं, वे अगर झुककर विकास की धारा को साधारण जनता तक पहुंचाने का रास्ता प्रशस्त कर देते हैं तो उनकी महानता की प्रशंसा होगी और अगर नहीं माने तो चाहे वे ऐरावत की तरह ही बलवान क्यों न हों, जनता के विद्रोह के सामने पत्तों की तरह बह जायेंगे। इसलिए अभी युद्ध की गंगा को लहराने देने की आवश्यकता है। अभी और भी युद्ध लड़ने हैं। समाज में जो असमानता है, उसे समाप्त करके समतामूलक समाज की स्थापना करनी होगी। यह काम किये बिना अवकाश नहीं लेना है। विषमता की काली जंजीरों को खण्ड–खण्ड करना होगा।

अंग्रेज गये लेकिन देश में अभी भी बहुत से दुश्मन छिपे हुए हैं। गांधी के हत्यारों और जवाहर के दुश्मनों का अहंकार चूर करने का काम अभी बाकी है। भेड़ियों का दांत तोड़ना और विषधरों को विषहीन करने का काम अभी भी बाकी है। ऐसे खूंखार दुश्मनों को समाप्त कर के देश में निर्भय शासन की स्थापना के लिए संघर्ष करना अभी बाकी है।

अंतिम बंद में कवि देश के दुश्मनों से सावधान करते हुए कहता है कि देश में गांधी की सेना को एक बार फिर बलि देनी होगी। हिन्दुओं और मुसलमानों में एकता और सौहार्द का सम्बन्ध कायम करना होगा। इस युद्ध की बेला में केवल वही हमारा दुश्मन नहीं है जो देश के विकास के रास्ते में रोड़ा बन कर खड़े हैं। जो इस युद्ध में तटस्थ हैं और युद्ध में शामिल नहीं हैं वे भी किसी अपराधी से कम नहीं हैं। भविष्य उन्हें भी इस अपराध के लिए दण्डित करेगा।

काव्य सौष्ठव–

- कविता में आजादी के सात वर्ष बाद भी आम जनता की गरीबी में सुधार न होने पर चिंता व्यक्त की गयी है।
- भारतीय जनता की गरीबी का बड़ा प्रभावशाली चित्र उकेरा गया है।
- देश में बैठे स्वराज्य के दुश्मनों पर कविता में रोष भरा है।
- कविता का शिल्प भाव के अनुरूप है।

विशेष–

इस कविता में गांधी के हत्यारों और नेहरू के निंदकों को देश का दुश्मन माना गया है। और उनसे सावधान रहने की सलाह दी गयी है।

तीन

वीर

सच है, विपत्ति जब आती है,
कायर को ही दहलाती है,
सूरमा नहीं विचलित होते,
क्षण एक नहीं धीरज खोते,
विघ्नों को गले लगाते हैं,
काँटों में राह बनाते हैं।

मुहँ से न कभी उफ कहते हैं,
संकट का चरण न गहते हैं,
जो आ पड़ता सब सहते हैं,
उद्योग–निरत नित रहते हैं,
शूलों का मूल नसाते हैं,
बढ़ खुद विपत्ति पर छाते हैं।

है कौन विघ्न ऐसा जग में,
टिक सके आदमी के मग में?
खम ठोंक ठेलता है जब नर
पर्वत के जाते पाव उखड़,

मानव जब जोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है।
गुन बड़े एक से एक प्रखर,
हैं छिपे मानवों के भीतर,
मेंहदी में जैसी लाली हो,
वर्तिका–बीच उजियाली हो,
बत्ती जो नहीं जलाता है,
रोशनी नहीं वह पाता है।

संदर्भ और प्रसंग–

हिन्दी के राष्ट्रवादी कवि रामधारी सिंह दिनकर की यह कविता देश की जनता में सोई हुई आत्मसम्मान और वीरता की भावना को जाग्रत करने के उद्देश्य से लिखी गयी है। आजादी के आंदोलन के दौर में इस तरह की वीर रसात्मक साहस बढ़ाने वाली कविताओं की जरूरत थी। इस कविता में कवि ने एक प्रकार से वीर पुरूष की प्रसंशा करने के साथ यह भी कहना चाहा है कि हर मनुष्य मे साहस और वीरता छिपी होती है।

कठिन शब्द

विपत्ति–संकट, **सूरमा**–वीर, **विघ्न**–बाधाएं, **उद्योग**–निरत–निरंतर काम करते रहना, **शूल**–कांटा, **मूल**–जड़, **मग**–रास्ता, **प्रखर**–तेज, **वर्तिका**–दिये की बाती,

व्याख्या–

वीर और कायर में अंतर बताते हुए कवि कहता है कि जब कोई मुश्किल या संकट का समय आता है तो कायर लोग घबराकर परिस्थिति से समझौता कर लेते हैं, लेकिन वीर लोग मुश्किल से मुश्किल घड़ी में भी घबराते नहीं है। धैर्य पूर्वक विपत्ति का सामना करते हैं। वीर लोग घबरा कर संकट के सामने समर्पण नहीं कर देते। मुश्किलों को सहन करते हुए अपने काम में लगे रहते हैं और एक समय ऐसा आता है कि वे विपत्ति को समूल नष्ट कर के उस पर हमेशा के लिए विजय प्राप्त कर लेते हैं।

वीरों की प्रशंसा करते हुए कवि कहता है कि इस संसार में ऐसा कोई भी संकट या बाधा नहीं है, जिसपर विजय पाना वीरों के लिए असंभव हो। वीर लोग असंभव लगने वाले संकटों पर भी जीत हासिल कर लेते हैं। मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो धैर्य और हिम्मत से यदि मुकाबला करने का संकल्प कर ले तो वह पर्वत को भी रास्ते से हटा सकता है। पत्थर की चट्टानों जैसे संकट भी पानी बन कर बह जाते है।

इस बंद में कवि ने मनुष्यों में छिपी ताकत की ओर ध्यान दिलाते हुए कहा है कि मनुष्य दिखने में साधारण लगता है, लेकिन उसके अंदर एक से बढ़कर एक गुण छिपे होते हैं। मेंहदी और दीपक से तुलना करके कवि समझाता है कि जैसे मेंहदी की पत्तियों में जैसे लाली छिपी होती है और दीपक की बाती में प्रकाश छिपा होता है, उसी प्रकार मनुष्यों में भी बहुत सारी ताकत छिपी होती है।

काव्य सौष्ठव–

- वीर की परिभाषा बड़े सुंदर ढंग से की गयी है।

- दृष्टांत अलंकार का कई जगह प्रयोग हुआ है।
- भाषा सरल और काव्यात्मक है।

विशेष–

लम्बी गुलामी से थके हारे भारतीयों के मन में साहस और संघर्ष का उत्साह पैदा करना इस कविता का प्रतिपाद्य है, जिसमें कवि सफल हुआ है।

चार

कलम आज उनकी जयबोल

कलम आज उनकी जयबोल
जला अस्थियाँ बारी–बारी
चिटकाई जिनमें चिंगारी,
जो चढ़ गये पुण्यवेदी पर
लिए बिना गर्दन का मोल
कलम, आज उनकी जय बोल।

जो अगणित लघु दीप हमारे
तूफानों में एक किनारे,
जल–जलकर बुझ गए किसी दिन
माँगा नहीं स्नेह मुँह खोल
कलम, आज उनकी जय बोल।

पीकर जिनकी लाल शिखाएँ
उगल रही सौ लपट दिशाएं,
जिनके सिंहनाद से सहमी
धरती रही अभी तक डोल
कलम, आज उनकी जय बोल।

अंधा चकाचौंध का मारा
क्या जाने इतिहास बेचारा,
साखी हैं उनकी महिमा के
सूर्य चन्द्र भूगोल खगोल
कलम, आज उनकी जय बोल।

संदर्भ और प्रसंग–

रामधारी सिंह दिनकर की यह कविता नन्द किशोर नवल द्वारा सम्पादित 'दिनकर रचनावली' में संकलित है। यह आजादी की लड़ाई में शहीद हो गये बलिदानियों की याद में लिखी गयी है। इसमें कवियों से शहीदों की जय बोलने के लिए कहा गया है। इस कविता का लक्ष्य जनता में देशप्रेम की भावना पैदा करना है।

कठिन शब्द

अस्थियां–हड्डियां, **पुण्यवेदी**–बलिवेदी, **अगणित**–जिसकी गणना न हो सके, अंसख्य, **शिखाएं**–ज्वालाएं, **सिंहनाद**– सिंह की गर्जना। **साखी**– साक्षी, गवाह, **खगोल**–आकाश

व्याख्या–

शहीदों की याद में लिखी गयी इस कविता में कवि कहता है कि जिन शहीदों की चिताओं से निकली चिंगारियों से देश में स्वतंत्रता के लिए मर मिटने की भावना रूपी आग फैल गयी, जिन्होनें निःस्वार्थ भाव से अपना बलिदान कर दिया, हे मेरी कलम आज उनकी जय बोलो!

आजादी की लड़ाई में ऐसे अगणित लोगों ने बलिदान दिये जिन्हें हम नहीं जानते। वे चाहते तो बलिदान होने से बच सकते थे। लेकिन उन्होनें किसी प्रकार का समझौता करने की बजाय देश की बलिवेदी पर मर मिटना ही अच्छा समझा, हे मेरी कलम ! तुम उनको याद करो।

जिन शहीदों के लहू की लपट से दिशायें लाल हो गयी थीं, जिनकी वीर गर्जना से धरती अभी तक डोल रही है, हे मेरी कलम! आज तुम उनका जयगान करो।

जो इतिहास के अंधे हैं, जिन्हें देश का कोई ज्ञान ही नहीं है, वे लोग इन शहीदों के बारे नहीं जानते। लेकिन ये सूरज, ये चांद, ये सम्पूर्ण पृथ्वी और आकाश जिन वीरों की शहादत का साक्षी रहे हैं, हे मेरी कलम ! उन वीरों का जयगान करेा।

काव्य सौष्ठव–

- यह कविता अपने कलेवर में छोटी है।
- भाषा सरल और सुबोध है।
- इसमें दीपक को शहीदों का प्रतीक माना गया है।
- प्रत्येक पंक्ति में 15 मात्रायें, प्रत्येक पद में पांच पंक्तियां और कविता में कुल चार पद हैं।

विशेष–इस कविता को पढ़कर मन में आजादी की लड़ाई में शहीद हुए ज्ञात अज्ञात सभी शहीदों के प्रति आदर भाव उत्पन्न होता है।

पांच

जियो जियो अय हिन्दुस्तान

जियो जियो अय हिन्दुस्तान
जाग रहे हम वीर जवान,
जियो जियो अय हिन्दुस्तान !
हम प्रभात की नई किरण हैं, हम दिन के आलोक नवल,
हम नवीन भारत के सैनिक, धीर ,वीर, गंभीर, अचल ।
हम प्रहरी उँचे हिमाद्रि के, सुरभि स्वर्ग की लेते हैं ।
हम हैं शान्तिदूत धरणी के, छाँह सभी को देते हैं।
वीर–प्रसू माँ की आँखों के हम नवीन उजियाले हैं
गंगा, यमुना, हिन्द महासागर के हम रखवाले हैं।
तन मन धन तुम पर कुर्बान,
जियो जियो अय हिन्दुस्तान !

हम सपूत उनके जो नर थे अनल और मधु मिश्रण,
जिसमें नर का तेज प्रखर था, भीतर था नारी का मन !
एक नयन संजीवन जिनका, एक नयन था हालाहल,
जितना कठिन खड्ग था कर में उतना ही अंतर कोमल।
थर–थर तीनों लोक काँपते थे जिनकी ललकारों पर,
स्वर्ग नाचता था रण में जिनकी पवित्र तलवारों पर
हम उन वीरों की सन्तान,
जियो जियो अय हिन्दुस्तान !

हम शकारि विक्रमादित्य हैं अरिदल को दलनेवाले,
रण में जमीं नहीं, दुश्मन की लाशों पर चलनेंवाले।
हम अर्जुन, हम भीम, शान्ति के लिये जगत में जीते हैं
मगर, शत्रु हठ करे अगर तो, लहू वक्ष का पीते हैं।
हम हैं शिवा–प्रताप रोटियाँ भले घास की खाएंगे,
मगर, किसी जुल्मी के आगे मस्तक नहीं झुकायेंगे।
देंगे जान, नहीं ईमान,
जियो जियो अय हिन्दुस्तान।

जियो, जियो अय देश! कि पहरे पर ही जगे हुए हैं हम।
वन, पर्वत, हर तरफ चौकसी में ही लगे हुए हैं हम।
हिन्द–सिन्धु की कसम, कौन इस पर जहाज ला सकता ।
सरहद के भीतर कोई दुश्मन कैसे आ सकता है ?
पर की हम कुछ नहीं चाहते, अपनी किन्तु बचायेंगे,
जिसकी उँगली उठी उसे हम यमपुर को पहुँचायेंगे।
हम प्रहरी यमराज समान
जियो जियो अय हिन्दुस्तान!

संदर्भ और प्रसंग–

'जियो जियो अय हिन्दुस्तान' कविता नन्दकिशोर नवल द्वारा सम्पादित 'दिनकर रचनावली' में संकलित है। राष्ट्रीय सीमाओं की रक्षा में सन्नद्ध वीर जवानों की ओर से लिखी गयी है। इसमें वीर जवानों की ओर से भारत देश के गरिमामय इतिहास और संस्कृति को स्मरण किया गया है।

कठिन शब्द

आलोक–प्रकाश, **नवल**– नया, **प्रहरी**– रखवाला, **हिमाद्रि**– हिमालय, **सुरभि**– सुगंध, **धरणी**– धरती, **वीर–प्रसू**– वीर पुत्रों को पैदा करने वाली, **कुर्बान**–बलिदान, **प्रखर**– तेज, **हालाहल**–विष, **खड्ग**–तलवार, **शकारि**– शकों के शत्रु, विक्रमादित्य, **शिवा–प्रताप**– शिवाजी और राणा प्रताप,

व्याख्या–

इस कविता में सैनिक कहते हैं कि हम वीर हैं। हमारे अंदर गंभीरता है। हम मुश्किलों में भी कभी विचलित नहीं होते। हिमालय की चोटियों पर देश की रक्षा करते हुए इतनी ऊंचाई

पर होते हैं कि वहां से स्वर्ग की सुगंध महसूस होती है। अपने बारे में कवि कहता है कि हम भारतीय जवान स्वभाव से शांतिपूर्ण होते हैं और सभी को अपना सहयोग देने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। हमारी भारत माँ जो वीरों को जन्म देती है, हम उसी की प्यारी संतानें हैं। देश की रक्षा के लिए हम अपना तनमन और जान भी देने के लिए तैयार रहते हैं।

इस कविता में कवि वीर जवानों की ओर से यह कहना चाहता है कि हमारे पूर्वज शांति में विश्वास रखते थे लेकिन आवश्यकता पड़ने पर क्रांति अथवा युद्ध से भी पीछे नहीं हटते थे। शांति और युद्ध दोनों में उनका विश्वास था। पुरूषोचित कठोरता और स्त्रियोचित कोमलता दोनों से हमारे स्वभाव का निर्माण हुआ है। हम उन वीरों की संतान है जिनके हाथों में तलवारें होती थीं, लेकिन दिल फिर भी कोमल होता था। उनकी ललकारों पर पूरी दुनिया हिल उठती थी। स्वर्ग भी नृत्य करने लगता था।

इस बंद में कवि अपने पूर्वजों का स्मरण करते हुए वीर जवानों के माध्यम से कहता है कि हम शकों का समूल नाश करने वाले विक्रमादित्य की संतानें हैं। युद्ध भूमि में हम लोग दुश्मनों की लाशें बिछा देते हैं।

अर्जुन और भीम जैसे योद्धाओं की तरह वैसे तो हम लोग शांति के प्रेमी हैं, लेकिन अगर कोई हमसे शत्रुता करने की ठान ही लेता है तो उसको जीवित नहीं छोड़ते। हम उस राणा प्रताप के वंशज हैं जिन्हें घास की रोटियां खाना मंजूर था लेकिन किसी दुश्मन के आगे सिर झुकाना मंजूर नहीं था। हम उस देश के वासी हैं जिसे जान से अधिक ईमान प्यारा है।

हे प्यारे देश वासियों! तुम्हारी रक्षा में हम सीमा पर हमेशा जाग रहे हैं। वनों पर्वतों में घूम–घूम कर हम शत्रुओं से देश का बचाव कर रहे हैं। हमारे देश पर आक्रमण करने की हिम्मत कोई भी देश नहीं कर सकता। हमें पराये देश पर आक्रमण करने की कोई अभिलाषा नहीं है। दूसरे की जमीन और सम्पत्ति का हमारे अंदर कोई मोह नहीं है, लेकिन हम अपनी सम्पत्ति पर भी किसी को हाथ नहीं लगाने देंगे। इस मामले में हक यमराज से कम नहीं हैं।

काव्य सौष्ठव–

- अलंकारों का प्रयोग स्वाभाविक ढंग से हुआ है।
- भाषा सरल ओजपूर्ण किन्तु आलंकारिक है।
- छंद बड़ा ही प्रभावी और विषय बोध के अनुरूप है।
- सीमा के सैनिकों का बड़ा सुन्दर चित्रण हुआ है।
- कविता का मूल स्वर देश प्रेम है।

विशेष–इस कविता से हमें शांति और युद्ध के बारे में हमारी भारतीय समझ और विचारधारा का पता चलता है। शांति की स्थापना के लिए अनिवार्य होने पर युद्ध करना हमारे पूर्वजों का सिद्धांत रहा है।

बोध प्रश्न–1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1. 'जननी के हिम–किरीट' से क्या आशय है ?

.....

.....

.....

2. हिमालय के लिए किन–किन विशेषणों का प्रयोग हुआ है ?

.....

.....

.....

3. शमर शेष है कविता में दिल्ली से कवि क्या पूछ रहा है?

.....

.....

.....

4. तिमिर पुत्र और दस्यु किसे कहा गया है?

.....

.....

.....

5. 'कांटों में राह बनाते हैं' से कवि का क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

6. वीर कविता में पर्वत किस चीज का प्रतीक है ?

.....

.....

.....

7. 'कलम आज उनकी जय बोल' कविता में क्या कहा गया है।

.....

.....

.....

8. विपत्ति आने पर बहादुर लोग क्या करते हैं?

.....

.....

.....

9. 'जियो जियो अय हिन्दुस्तान' में वीर जवान अपने को किसका सपूत बताता है?

.....

.....

.....

बोध प्रश्न–2

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

i. हिम किरीट किसे कहा गया है,?

क) हिमालय ख) हिमखण्ड ग) चीन घ) ठंढे प्रदेश

ii. प्रलय–नृत्य करने को किससे कहा गया है?

क) भगवान शंकर से ख) विष्णु से ग) ब्रम्हा से घ) कृष्ण से

iii. 'हिमालय' कविता किस संग्रह में संकलित है?

क) रश्मिरथी ख) उर्वशी ग) हुंकार घ) नील कुसुम

iv. दिनकर को किस पुस्तक के लिए ज्ञान पीठ दिया गया था?

क) उर्वशी के लिए ख) नील कुसुम ग) हुंकार घ) पुरूरवा

v. ओ रेशमी नगर के वासी में किस नगर के वासी की तरफ संकेत है?

क) दिल्ली ख) लंदन ग) कलकत्ता घ) बम्बई

vi. रानी किसे कहा गया है?

क) विक्टोरिया को ख) लक्ष्मी बाई को ग) दिल्ली को घ) सरोजनी नायडू को

vii. कवि अपनी कलम से किसकी जय बोलने को कहता है?

क) महात्मा गांधी की ख) नेहरू की ग) शहीदों की घ) भगत सिंह की

viii. 'कलम आज उनकी जय बोल' कविता में लघु दीपों ने क्या नहीं मांगा?

क) धन ख) सहयोग ग) स्नेह घ) बाती

ix. 'जियो जियो अय हिन्दुस्तान' कविता का वाचक कौन है?

क) कवि ख) स्वतंत्रता के आंदोलनकारी ग) वीर जवान
घ) गांधी जी

20.3 उपयोगी पुस्तके

दिनकर रचनावली, संपादक– नन्द किशोर नवल

20.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न–1

1. यहाँ जननी शब्द कवि ने भारत माता के लिए प्रयोग किया है। हिमालय पर्वत भारत देश के उत्तर दिशा में फैला हुआ है, वो वर्ष के ज्यादातर समय बर्फ से ढँका हुआ होता है, इसलिए ऐसा लगता है जैसे भारत माता के सर पर बर्फ का मुकुट है, इसलिए यहाँ कवि ने हिमालय को मेरी जननी के हिम–किरीट कहा है।

2. हिमालय को नगपति, विशाल, साकार, दिव्य, गौरव विराट जैसे विशेषणों से संबोधित किया गया है इसके अलावा उसे भारत माता का बर्फ से बना मुकुट, युगों–युगों से अजेय, निर्बंध, मुक्त, गर्वोन्नत और महान भी कहा गया है ।

3. दिल्ली स्वाधीन भारत की सत्ता का प्रतीक है। आजादी मिलने के बाद दिल्ली यानी सत्ता से जुड़े लोगों का उत्थान खूब हुआ, लेकिन साधारण जनता के जीवन में कोई बदलाव नहीं आया। दिल्ली चमक उठी लेकिन देश का अंधकार जैसे का तैसा ही रहा।

4. तिमिर पुत्र और दस्यु उन लोगों को कहा गया है जो अंग्रेजों के चले जाने के बाद भी देश में गुलामी का शासन बनाये रखना चाहते थे।

5. कांटों में राह बनाना एक मुहावरा है। इस मुहावरे का अर्थ है जहां कोई रास्ता न हो, या रास्ता निकालना एक दम असंभव हो, वहां भी रास्ता निकाल लेना। अर्थात मुश्किल से मुश्किल समय पर भी विजय प्राप्त कर लेना। 'वीर' कविता में कवि कहता है कि वीर लोग बड़ी से बड़ी मुश्किलों पर भी विजय प्राप्त कर लेते हैं।

6. वीर कविता में पर्वत विघ्न–बाधाओं का प्रतीक है। पहाड़ों को पार करना जिस तरह मुश्किल होता है, उसी तरह विघ्न भी जीवन में प्रगति का रास्ता रोक देते हैं।

7. इस कविता में आजादी की लड़ाई में शहीद हुए ज्ञात अज्ञात सभी शहीदों को याद किया गया है। उनके निःस्वार्थ बलिदान की प्रशंसा के लिए कवियों को प्रेरित किया गया है। राष्ट्रवाद इस कविता का मूल स्वर है।

8. विपत्ति आने पर बहादुर लोग नहीं घबराते। वे विपत्ति का धैर्य से मुकाबला करते हैं। वे काँटों में रास्ता बनाते हैं और परिश्रम करके उपलब्धि प्राप्त करते हैं।

9. वीर जवान अपने को ऐसे पूर्वजों का सपूत बता रहा है जो स्वभाव से अग्नि और शहद के मिश्रण थे। जिनमें पुरूष की कठोरता और स्त्री जैसी कोमलता साथ–साथ विद्यमान थी। जिनके हाथ में कठोर तलवार होती थी लेकिन आत्मा बहुत कोमल थी।

बोध प्रश्न–2

i. क

ii. क

iii. ग

iv. क

v. क

vi. ग

vii. ग

viii. ग

ix. ग

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY